



MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1341
10/12

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No.

239

1064 Dec. 1930

239

॥ वन्देमातरम् ॥
Asahyogi Deewane ki Tarang

असहयोगी दीवाने

की तरंग in Hindi
Govt. of U.P.



प्रकाशक
संगमलाल अग्रवाल
इलाहाबाद ।



प्रथमवार]

[मूल्य ८]

891/431
As



(४)
❀ वन्देमातरम् ❀

असहयोगी दीवाने की तरंग

—:ॐ:—

भजन नं० १

भंडा ऊंचा रहे हमारा ।

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा,

भंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

सदा शक्ति बरसाने वाला,

प्रेम-सुधा सरसाने वाला ॥

वीरों को हर्षाने वाला,

मातृ-भूमि का तन मन सारा ।

भंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में,

लखकर बढ़े जोश क्षण क्षण में ।

काँपे शत्रु देख कर मन में,

मिट जावे भय-संकट सारा ॥

भंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

(४)

इस भंडे के नीचे निभय,
ले स्वराज्य यह अविचल निश्चय ।
बोलो भारत माता की जै,
स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ॥

भंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

आवो प्यारे, वीरो ! आओ,
देश धर्म पर बलिबलि जाओ ।
एक साथ सब मिलकर गाओ,
प्यारा भारत देश हमारा ॥

भंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

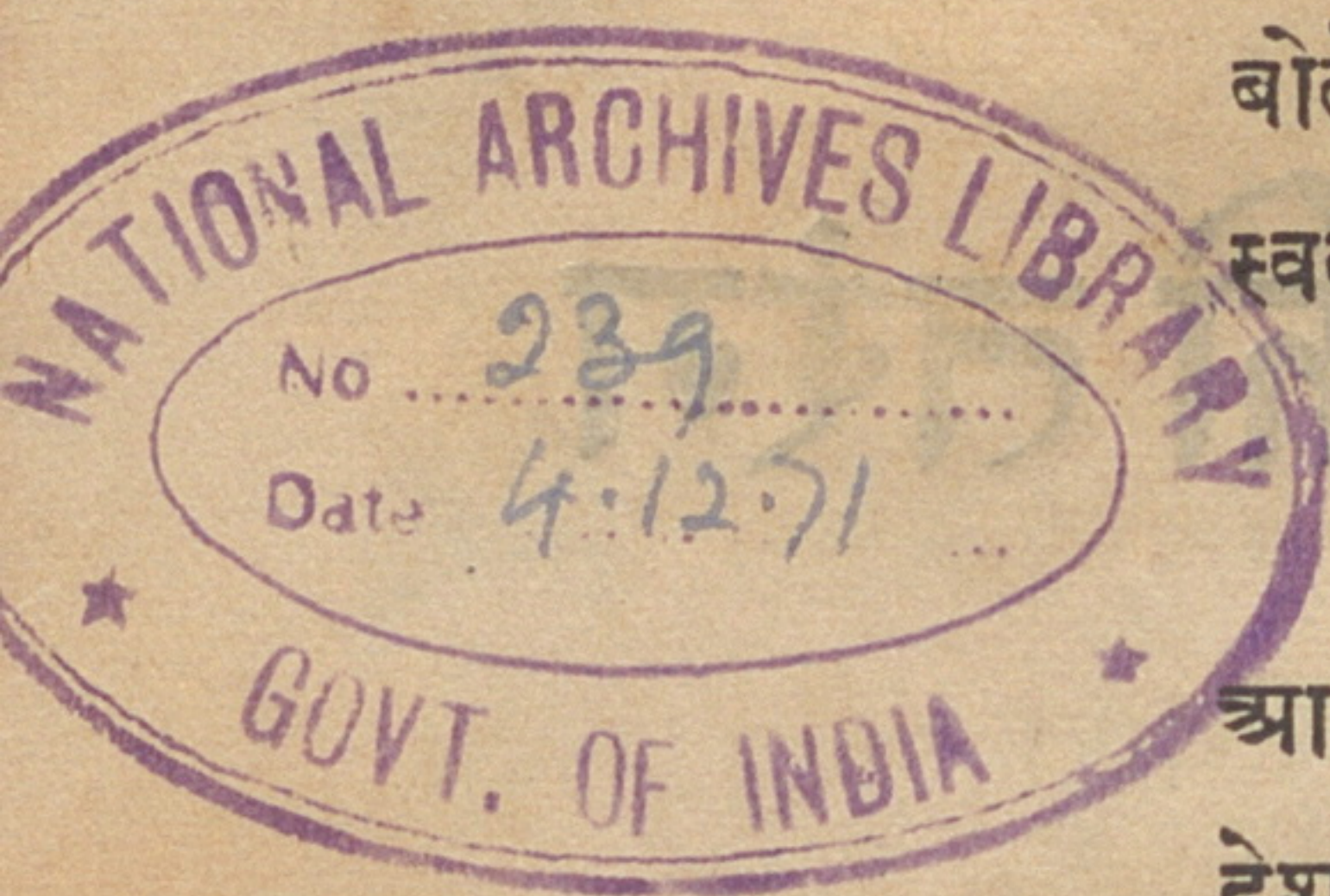
इसकी शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे ।
विश्व विजय करके दिखलावे,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥

भंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

—:०:—

भजन नं० २

आहा ? क्या ही ओजमय है, शब्द वन्देमातरम् ।
बोलो दो सब हिन्दियो अब, मन्त्र वन्देमातरम् ॥



मुख में वन्देमातरम् है, मन में वन्देमातरम् ।
 नाड़ियों के रक्त में बहता है वन्देमातरम् ॥ आ०
 खंजरे कातिल भले ही कत्ल कर देना हमें ।
 चीख भी निकलेगी तो निकलेगी वन्देमातरम् ॥ आ०
 बल जरा मकतूल के चेहरे पै हो मुमकिन नहीं ।
 हर लहू के कतरे से टपकेगा वन्देमातरम् ॥ आ०
 खून मकतल में बेहाल यूँ ही क्या हरगिज नहीं ।
 भूमि पर लिखता चलेगा शुद्ध वन्देमातरम् ॥ आ०
 बावजूद इसके कि बोले सब के पहिले और कुछ ।
 दुधमुहे बच्चे भी बोले, शब्द वन्देमातरम् ॥ आ०
 संगम तप यही सिज्दा यही मन्दिर यही ।
 है यही मसजिद यही मजहब है वन्देमातरम् ॥ अ०

भजन नं० ३

शहीदों के खूँ का असर देख लेना

मिटायेंगे जालिम का घर देख लेना ।

किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं,

बहा देंगे खूँकी नहर देख लेना ॥

भुका देंगे गरदन को हम ज़ोर खंजर,

खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ।

जो खुदगर्ज गोली चलायेंगे हम पर,
तो कदमों में उनके ही सर देख लेना ॥

जो नखल हमने सीचा है खूने जिगर से,
वह होगा कभी बार बार देख लेना ।

किनारे पै आये भंवर से यह किशती,
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना ॥

बालायें ये जायँगी खुद सर नगीं हो,
नहीं होगी इनकी गुजर देख लेना ।

खुजन्दी हुआ अहन्द आजाद अपना,
छपेगी यह एक दिन खबर देख लेना ॥

भजन नं० ४

कट कट के मरना होगा ।

आओ वीरो मर्द बनो अब जेल तुम्हें भरना होगा ।

सत्याग्रह के समर-क्षेत्र में आ आकर डटना होगा ॥ कट० ॥

सूर लड़ाके मरदाने हो पैर हटाना कभी नहीं ।

मरते मरते माता का अब कर्ज अदा करना होगा ॥ कट० ॥

वक्त नहीं है ए वीरों अब गाफिल होकर सो नेका ।

दौड़ चलो मैदानों में माता का दुःखहरना होगा ॥ कट० ॥

याद करो माता का तुमने बहुत दुग्ध है पान किया ।
 दुग्ध पिये को लाज बहादुर किसी तरह रखना होगा ॥ कट०
 शेर मर्द हो बीर बाँकुड़ा याद करो कर्तव्यों का ।
 मातृ वेदी पर हंसते हँसते कट कटके मरना होगा ॥ कट०

—:०:—

भजन न० ५

अब इस सल्तनत को मिटाना पड़ेगा ।
 जो कहते थे करके दिखाना पड़ेगा ॥
 हमें खून में अब नहाना पड़ेगा ।
 वतन के लिये सर कटाना पड़ेगा ॥
 ये बन्दर न बाज आएँगे अपना जिद से ।
 तो चखों पर इनको नचाना पड़ेगा ॥ अब ॥
 मिलेगी कहीं बाद में कामयाबी पड़ेगा ।

गमो रंज पहले उठाना पड़ेगा ॥ अब० ॥

ज्यादा न कर सख्तियाँ मुझ पर जालिम ।

खुदा को तुझे मुँह दिखाना पड़ेगा ॥ अब० ॥

कहीं जल्द आजाद हों हिन्दवाले ।

कहां तक इन्हे गम उठ ना पड़ेगा ॥ अब० ॥

। तबही स्वराज इस तरह से तो मिलना है मुश्किल ।

हमें खून अपना बहाना पड़गा ॥ अब ॥

भजन न० ६

गुलामी की हस्ती मिटानी पड़गी,

हमें भी कुछ करके दिखानी पड़गी ।

कभी उफ़न लाऊँगा अपनी ज़बों पर,

मुसीबत सभी तो उठानी पड़गी ॥

गुलामी की हस्ती मिटाकर रहूँगा,

आजादी की झण्डी उठनी पड़गी ।

“भारत” के वासी,

अंगरेजों की हुकूमत उठानी पड़गी ॥

भजन न० ७

(स्चयिता—राष्ट्रीय कवि पं० माधव जी शुक्ल)

निकल पड़े मैदाने जंग में गर कोई अभिमानी हैं ।

आज देखना है किसमें कितना दम, कितना पानी है ॥

उठ बैठो सब काम छोड़ कर आज देश हित नारी नर ।

बलिदानों का ढेर लगा दो स्वतंत्रता की वेदी पर ॥

दहला दो दिल्ली दीवारे ओ भारत के बाँके बीर ।
 चूर चूर कर दो सदियों की पराधीनता की जंजीर ॥
 आज हिन्द में फिर से मर कर नई जान पहनानी है ।

आज देखना है: —

लाल जवाहर लूट लिये हमने कुछ भी परवाह न की ।
 वीर जवाहर लेने पर भी हमने मुख से आह न की ॥
 प्राण जवाहर आज छिन गया तुम चुपके रह जाओगे ।
 शर्माओगे जरा नहीं क्या कुल में दाग लगाओगे ?
 व्याज सहित इन बनियों से हमको सब रकम चुकानी है ।
 आज देखना है ॥

रण दुदुंभा बजी गान्धी की सहज कोई कप्तान नहीं ।
 होंगे या आजाद नहीं तो तन में होगी जान नहों ॥
 किन्तु न बल से रहने देंगे अकल ठिकाने कर देंगे ।
 हम भारती आज मर कर माता की भोंली भर देंगे ।
 “ माधव, आज लाज गांधी की मर कर हमें बचानी है ॥
 आज देखना है ॥

भजन न० ८

खून के प्यासों फिरंगी क्या तुम्हारे दिल में है ।
 हिन्द को वरवाद करना क्या तुम्हारे दिल में है ॥

वे गुनाहों के लिये तै कर चुके हों ठीक २ ।
 मौत का पैगाम लाना क्या तुम्हारे दिल में है ॥
 हम तो अब हटते नहीं इस मकत्ले-मैदान से ।
 कत्ल करने का इरादा क्या तुम्हारे दिल में है ।
 खून के दरिया बहा दें हम वतन के वास्ते ॥
 जोर जुल्मों से दबाना क्या तुम्हारे दिल में है ।
 अपने अरमां और जुर्रत आजमावो शौक से ॥
 खाक में मिल कर उड़ेंगे क्या तुम्हारे दिल में है ।
 देखना उसमें कहीं पैदा न हो जाय ये रूह ।
 एक से दो होके आवे क्या तुम्हारे दिल में है ॥
 चर्व से विजली सरों पर कोह से पत्थर की मार ।
 हौसलों को खत्म करना क्या तुम्हारे दिल में है ॥
 हिन्द का वच्चा सलामत एक भी कायम रहे ।
 शान को उसकी मिटाना क्या तुम्हारे दिल में है ॥
 अब नहीं आसान है काबू में लाना हिन्द का ।
 गौर करके सोच लो फिर क्या तुम्हारे दिल में है ॥
 इस लिये विस्तर समारो कूच लंडन का करो ।
 हिन्द का फिर नाम लेना क्या तुम्हारे दिल में है ॥

स्वतन्त्रजीवी

जोगी के वरण में हम निकले ऐ अहले वतन तुम शाद रहो ।
 हम जान वतन देने को निकले हैं तुम आबाद रहो ॥
 घर बार सभी छोड़ा हमने की है उलफत आजादी से ।
 हम रहे रहे न रहे तुम तो अहले वतन आज्ञाद रहो ॥
 आजादी हम पर रोती है मुँह अशकों से हसरत धोती है ।
 जब बच्चे मावों से कहते हैं हम हो कि न हों तुम शाद रहो ॥
 तहरीक खुदा आज्ञादी की यों राह हमें दिखाती है ।
 अब आया वक्त रिहाई का आज्ञाद रहो आज्ञाद रहो ॥
 इस काम का हर इक आमिल हो तहरीक खुदा जब शामिल ।
 बर्ना चन्द कहो उनके अब चूड़ी पहना और शाद रहो ॥

 भजन नम्बर १०

जो ज़ख्म को उनके मक़तल में,
 बल्लियों की अनी रहेगी ।
 तो हम निशाने बनेंगे फिर भी,
 हमारी गरदन तनी रहेगी ॥
 जो जुल्मबाजों की गन-मशीनें,
 चलेगी हम बेकसों के ऊपर ।

तो बाखुदा मर मिटेंगे हम सब,

मगर यह हसरत बनी रहेगी ॥

लगा के भालों पै चाहे भाले या

तोप ही दम न क्यों करा दे ॥

मगर ये जीते जी हम कहेंगे,

ठनी है जो बस ठनी रहेगी ।

वो जुल्म ढालें हजारों मुझपर,

पै हम अहिंसा का व्रत करेंगे ॥

करिश्मा भी उनका देख लेंगे,

कि कब तलक दुश्मनी रहेगी ।

मचल के पहलू में दिल है कहता,

कि हम हैं “शायक” स्वतंत्रता के ॥

तुम्हारी तोपों के वामुकाविल,

हमारी ये लेखनी रहेगी ॥

—:०:—

भजन नम्बर ११

मित्रो चखे से देश सुधार है ।

हाँ चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥

यही गांधी जी का फरमान है ।

हां चरखा भारत का कल्याण है ॥

चरखा नारियों का शृङ्गार है ।

हां चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥

चरखा लंडन को नीचा दिखादेगा ।

हाँ स्वाराज की राह बतायेग ॥

इससे दुनिया का उपकार है ।

हाँ चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥

इससे बढ़ती है कौमी शान भी ।

हां होगा फख्रे जहां हिन्दोस्तान भी ॥

सारा चरखे पै दारो मदार है ।

हां चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥

—:०:—

भजन नं० ११

ऐ मादरे हिन्द न हो गमगीं दिन अच्छे आने वाले हैं ।

आजादी का पैग़ाम तुम्हे हम जल्द सुनाने वाले हैं ॥

माँ तुम्हको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ जईफी में ।

मायूस न हो मगरूरों को हम मजा चखाने वाले हैं ॥

बेचैन हैं हम बेकस हैं हम गो कुञ्ज कफस के कैदी हैं ।

बेबस हैं लाख मगर माता हम आफत के परकाले हैं ॥

मेरी रूह को करना कैद कफस इमकान से इनके बाहर हैं ।

आजाद है अपना दिल शैदा गो लाख जबां पर ताले हैं ॥

यहाँ आये मुसाफिर बड़े बड़े मगरूर फिर आखिर चले गये ।
ये भी चन्द रोज़ में परदेशी लन्दन को जाने वाले हैं ॥

—:०:—

भजन नं० १२

सतरंज का खेल वीछाया है भारत में लाल जवाहर ने ।
चल कर चाले चालाको को दहलाया लाल जवाहर ने ॥
पैदल जितने है कसद किये है जेलों का फाटक तोड़ेगे ।
सरदारों को किस्ती देना सिखलाया लाल जवाहर ने ॥
वे सह सवार अरु फीलो से वाजी का जोड़ समाला है ।
पैदल लड़ कर मरना रण में सिखलाया लाल जवाहर ने ॥
वे जोर सिपाही लड़ते है दुश्मन हिम्मत वर डरते हैं ।
सतरंज का खेल निराला ये सिखलाया लाल जवाहर ने ॥
घर खाली नजरों में आवै उसमें ही कदम बढ़ा देना ।
तुम मात करोगे अय वीरों ललकारा लाल जवाहर ने ॥

स्वतंत्र जीवी

भजन नं० १३

वीरो कर्म क्षेत्र में आकर निज साहस दिखलाना है ।
जननी जन्म भूमि के हित में वलिदान दिखना है ॥

चाहे मेघों के समान वह घटा बांध हुँकार करै ।
 चाहे धूम शक्ति को लेकर अनायास बौछार करें ॥
 चाहे नित नव सस्र हाथ लै विकरालसम टूट परै ।
 या घन गर्जन गोलों को ले अटहास ललकर करे ॥
 सन्मुख से हटना नहिं तिल भर आगे कदम बढ़ाना है । वीरो०
 कह देना वो शत्रु सेन से समय नहीं धमकाने का ॥
 चापलूस वन ब्रिटिश और से समय नहीं समझाने का ।
 चुपके से मुट्ठी में देकर समय नहीं वहकाने का ।
 अब तो आया काल तुम्हारा भारत से भग जाने का ॥
 देश अभिमान रखने वाले अपना अब प्रबल बतलावा है ॥

भजन नं० १४ -

भारत मां की शान निराली ।
 असहयोग सिखलाने वाली ॥
 अभयदान वीरो को देती ।
 सारे संकट को हर लेती ॥
 सुख स्मपत से ग्रह भर लेती ।
 दुष्ट दलिन संहारने वाली ॥ भारत० ॥
 राष्ट्रवीर मिल गान करतु है ॥
 शान्ति भाव से युद्ध करतु है ।
 शत्रु हमारे खूब डरतु हैं !

रण बिजई कहलाने वाली ॥

स्वतंत्रता धरण कर मन में ।

कपट रूप होवै नहिं तन में ॥

आओ वीरो भीषण रण में ।

राज्य दुष्ट भंग मरने वाली ॥

मारो नहीं आप मर जावो ।

पर पीछे नहिं पैर हटाओ ॥

अभिमानिनी का मान घटाओ ।

विजय प्राप्त है होने वाली ॥

स्वतंत्र जीवी

